किसलय

(भाग-2)

सातवीं कक्षा की हिंदी पाठ्यपुस्तक

सत्यमेव जयते

© WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

Developed by: www.absol.in

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

निदेशक (प्राथमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।

सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत
पाठ्य-पुस्तकों का निःशुल्क वितरण ।
क्रय-विक्रय दण्डनीय अपराध ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

सर्व शिक्षा अभियान : 2013-14 - 17,83,499

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित तथा सुपर ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड स्टेशनर्स, नया टोला, पटना-4 द्वारा एच॰पी॰सी॰ के 70 जी॰एस॰एम॰, एस॰एस॰ क्रीम वोभ टेक्स्ट पेपर (वाटर मार्क) तथा एच॰पी॰सी॰ के 130 जी॰एस॰एम॰ ह्वाईट (वाटर मार्क) आवरण पेपर पर कुल 8,46,547 प्रतियाँ 18x24 सेमी. साईज में मुद्रित।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल, 2009 से प्रथम चरण में राज्य के कक्षा IX हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया। इस क्रम में शैक्षिक सत्र 2010–11 के लिए वर्ग I, III, V एवं X की सभी भाषायी एवं गैर भाषायी पाठ्य-पुस्तकें नए पाठ्यक्रम के अनुरूप लागू की गयी। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित वर्ग X की गणित एवं विज्ञान तथा एस.सी.ई.आर.टी., बिहार, पटना द्वारा विकसित वर्ग I, III, VI एवं X की सभी अन्य भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकें बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक निगम द्वारा आवरण निर्माण कर मुद्रित की गयी। इसी सिलसिले की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए शैक्षिक सत्र 2011–12 के लिए वर्ग I, V एवं VI तथा शैक्षिक सत्र 2012–13 के लिए वर्ग V एवं VII की नई पाठ्य पुस्तकें बिहार राज्य के छात्र/छात्राओं के लिए उपलब्ध करायी गयीं। साथ ही साथ वर्ग I से VII तक की पुस्तकों का नया संस्करण जिसे पुनः भी शैक्षिक सत्र 2013–14 के लिए एस.सी.ई.आर.टी., बिहार, पटना के सौजन्य से प्रस्तुत किया जा रहा है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण विकास के लिए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार, शिक्षा मंत्री, श्री पी.के. शाही एवं शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव, श्री अमरजीत सिन्हा के मार्गदर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली तथा एस.सी.ई.आर.टी., बिहार, पटना के निदेशक के भी हम आभारी हैं जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उत्कृष्ट स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सफल सिद्ध हो सके।

जे॰ के॰ पी॰ सिंह, भा॰ रे॰ का॰ से॰
प्रबन्ध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि॰

BSTBPC © NOT TO BE PUBLISHED
WEBCOPY

दिशा बोध-सह-पाठ्य पुस्तक विकास समन्वय समिति

Û **Jh jkgqy flag]** jkT; ifj;kstuk funs'kd] fcgkj f'k{kk ifj;kstuk ifj"kn~] iVuk

Û **Jh jke'kj.kkxr flag]** la;qDr funs'kd] f'k{kk foHkkx] fcgkj ljdkj] fo'ks"k dk;Z

inkf/kdkjh ch-,l-Vh-ch-ih-lh-]iVuk

Û **Jh glu okfjl]** funs'kd] ,l-lh-bZ-vkj-Vh-] iVuk

Û **Jh e/kqlwnu ikloku]** dk;ZØe inkf/kdkjh] fcgkj f'k{kk ifj;kstuk ifj"kn~] iVuk

Û **MkW- ,l-,- eqbZu]** foHkkxkè;{k] ,l-lh-bZ-vkj-Vh-] iVuk

Û **MkW- Kkunso ef.k f=kBh]** izkpk;Z] eS=s; dkWyst vkWQ ,tqds'ku ,.M

पाठ्य-पुस्तक विकास समिति

विषय-विशेषज्ञ :

- **डा० कासिम खुर्शीद,** विभागाध्यक्ष (भाषा विभाग), एस.सी.ई.आर.टी., पटना
- **श्री वीरेन्द्र सिंह रावत,** शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

लेखक सदस्य :

- **श्री अखिलेश कुमार सिंह,** शिक्षक, रा० प्राथमिक विद्यालय, रजासन, बिदुपुर, वैशाली
- **श्री राजमंगल तिवारी,** शिक्षक, उ० मध्य विद्यालय, बखरियाँ, भोजपुर
- **श्री वृजेन्द्र विमल,** शिक्षक, रा० मध्य विद्यालय नवटोल करिहों, सुपौल
- **श्रीमती संजू राय,** शिक्षिका, रा० मध्य विद्यालय सादीपुरघाट, खानपुर, समस्तीपुर
- **डा० सियाराम मिश्र,** शिक्षक , रा० प्राथमिक विद्यालय, बगवतपुर, भोजपुर
- **कुमार अनुपम मिश्र,** विद्या भवन सोसाइटी, उदयपुर (राजस्थान)

समन्वयक :

- **डा० अर्चना,** व्याख्यता, एस.सी.ई.आर.टी., पटना

समीक्षक :

- **डॉ० कलानाथ मिश्र,** रीडर, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, ए. एन. कॉलेज, पटना
- **श्रीमती किरण शरण,** प्राचार्या, रा० कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पटना सिटी, पटना

आरेखन एवं चित्रांकन :

- **सदानन्द सिंह,** धंधुआ, वैशाली

आभार : यूनिसेफ, बिहार

आमुख

यह पुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008 के आलोक में विकसित नवीन पाठ्यक्रम के आधार पर तैयार की गई है। इस पुस्तक के विकास में इस बात का ध्यान रखा गया है कि "शिक्षा का मतलब बिहार के स्कूली शिक्षार्थियों को इतना सक्षम बना देना है कि वे अपने जीवन का सही-सही अर्थ समझ सकें, अपनी समस्त संभावनाओं का समुचित विकास कर सकें, अपने जीवन का मकसद तय कर सकें और उसे पूरा करने हेतु सब संभव सार्थक एवं प्रभावी प्रयास कर सकें और साथ ही साथ इस बात को भी समझ सकें कि समाज के दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा ही करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है।" राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008 हमें बताती है कि शिक्षार्थी के स्कूली जीवन और स्कूल से बाहर के जीवन में अंतराल नहीं होना चाहिए। पुस्तक और पुस्तक से बाहर की दुनिया आपस में जुड़ी होनी चाहिए। आशा है कि यह कदम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बालकेंद्रित शिक्षा व्यवस्था की दिशा में काफी दूर तक ले जाएगा।

इस पुस्तक में बच्चों की कल्पनाशक्ति के विकास, उनकी गतिविधियों की सृजनशीलता, उनके सवाल करने और उनके उत्तर पाने के मौलिक अधिकार को समुचित संरक्षण और उसे रचनात्मक दिशा देने की कोशिश की गई है। बच्चों के पूर्वज्ञान, परिवेश की समझ आदि का पूर्ण सम्मान किया गया है। हर पाठ के साथ अनेक तरह के अभ्यास हैं जिनसे शिक्षार्थियों की पाठ पर पकड़ तो बनती ही है, साथ ही साथ उनके भीतर स्वाभाविक जिज्ञासा को प्रोत्साहन मिलेगा। पुस्तक की परिकल्पना में अनेक महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा गया है। ऐसा प्रयत्न किया गया है कि पाठ बोझिल न हों तथा सामाजिक जीवन संदर्भों से जुड़ कर बच्चों के लिए रोचक बन जाएँ ताकि बच्चे उत्सुकता और आनंद के साथ तनावमुक्त रीति से उन्हें पढ़ते हुए बहुविध जानकारी प्राप्त करें और उस जानकारी का ज्ञान की सृजन में उपयोग कर सकें।

पाठ्यपुस्तकों के निर्माण हेतु राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना ने विभिन्न पदाधिकारियों, संकाय सदस्यों, विषय विशेषज्ञों, भाषाविदों एवं प्रारंभिक शिक्षकों की विभिन्न कार्यशालाएँ आयोजित कीं। इन कार्यशालाओं में राष्ट्रीय शिक्षा शोध और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, विद्या भवन सोसाइटी, उदयपुर (राजस्थान), एकलव्य (भोपाल) एवं अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशनों से प्रकाशित पुस्तकों का अध्ययन कर राज्य के प्रारंभिक स्तर के शिक्षक समूह द्वारा पुस्तक की पांडुलिपि तैयार की गयी। विकसित पुस्तक को पटना एवं वैशाली जिला के कुछ विद्यालयों में क्षेत्र परीक्षण (ट्रायल) के पश्चात प्राप्त सुझावों के आलोक में विषय-विशेषज्ञों एवं शिक्षाविदों द्वारा समीक्षोपरांत पुस्तक परिष्कृत स्वरूप में किसलय, भाग-7 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

नये सत्र में क्षेत्र-परीक्षण के पश्चात् आपके द्वारा प्राप्त सुझाव एवं सुधार के आलोक में पाठ्यपुस्तक में आवश्यक संशोधन कर दिया गया है। भविष्य में आपके सहयोग की प्रत्याशा में यह पाठ्यपुस्तक पुनः आपके समक्ष प्रस्तुत है।

पाठ्यपुस्तक निर्माण में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सम्बद्ध शिक्षकों, विषय विशेषज्ञों एवं सुप्रसिद्ध साहित्यकारों, जिनकी चर्चित रचनाएँ इन पुस्तकों में शामिल की गयी हैं, हम उनके प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं।

हसन वारिस
निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

पाठ-सूची

क्र.सं.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	मानव बनो	कविता	शिवमंगल सिंह 'सुमन'	1
2.	नचिकेता	कहानी	कठोपनिषद् से	3
3.	पुष्प की अभिलाषा	कविता	माखन लाल चतुर्वेदी	10
4.	दानी पेड़	कहानी	शेल स्लिवरस्टाइन	12
5.	वीर कुँवर सिंह	जीवनी	पाठ्यपुस्तक विकास समिति	16
6.	गंगा स्तुति	कविता	विद्यापति	21
7.	साइकिल की सवारी	व्यंग्य-कथा	सुदर्शन	23
8.	बचपन के दिन	संस्मरण	ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	31
9.	वर्षा बहार	कविता	मुकुटधर पाण्डेय	34
10.	कुंभा का आत्म बलिदान	कहानी	संकलित	36
11.	कबीर के दोहे	पद्य	कबीर	41
12.	जन्म-बाधा	कहानी	सुधा	43
13.	शक्ति और क्षमा	कविता	रामधारी सिंह 'दिनकर'	47
14.	हिमशुक	कहानी	शंकर	50
15.	ऐसे-ऐसे	एकांकी	विष्णु प्रभाकर	58
16.	बूढ़ी पृथ्वी का दुख	कविता	निर्मला पुतुल	66
17.	सोना	रेखाचित्र (कहानी)	महादेवी वर्मा	68
18.	हुएनत्सांग की भारत यात्रा	यात्रा-वृत्तान्त	बेलिन्दर एवं हरिन्दर धनौआ	76
19.	आर्यभट	जीवनी	पाठ्यपुस्तक विकास समिति	81
20.	यशस्विनी	कविता	बेबी रानी	85
21.	गुरु की सीख			89
22.	समय का महत्व			90
	शब्दकोश			91

1 मानव बनो

है भूल करना प्यार भी,
है भूल यह मनुहार भी,
पर भूल है सबसे बड़ी,
करना किसी का आसरा,
मानव बनो, मानव जरा।

अब अश्रु दिखलाओ नहीं,
अब हाथ फैलाओ नहीं
हुंकार कर दो एक जिससे,
थरथरा जाए धरा,
मानव बनो, मानव जरा।

उफ, हाय कर देना कहीं,
शोभा तुम्हें देता नहीं,
इन आँसुओं से सींचकर कर दो,
विश्व का कण-कण हरा,
मानव बनो, मानव जरा।

अब हाथ मत अपने मलो,
जलना, अगर ऐसे जलो,
अपने हृदय की भस्म से,
कर दो धरा को उर्वरा,
मानव बनो, मानव जरा।

– शिव मंगल सिंह 'सुमन'

शब्दार्थ

मनुहार- मनाना, विनती **अश्रु**- आँसू **धरा**-पृथ्वी

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. 'मानव बनो' शीर्षक कविता के कवि कौन हैं?
2. मानव बनने के लिए हमें कौन-कौन से कार्य करने चाहिए?
3. कवि के अनुसार सबसे बड़ी भूल क्या है?

४. अर्थ स्पष्ट कीजिए

(क) अब अश्रु दिखलाओ नहीं,
अब हाथ फैलाओ नहीं,

(ख) अब हाथ मत अपने मलो,
जलना, अगर ऐसे जलो,
अपने हृदय की भस्म से,
कर दो धरा को उर्वरा।

पाठ से आगे

1. मानव बनने की बात जो कवि द्वारा बतायी गयी है, इसके अतिरिक्त आप मानव में और कौन-कौन सा गुण देखना चाहेंगे?
2. अगर कोई समस्या आपके सामने आती है, तो इस समस्या का समाधान आप कैसे करते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।
3. "मानव होने का अर्थ है अपने जीवन पर खुद का अधिकार।" इस विचार की तर्कपूर्ण समीक्षा कीजिए।

व्याकरण

1. 'हाथ फैलाना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है- कुछ माँगना। इस प्रकार शरीर के विभिन्न अंगों से जुड़े अनेक मुहावरे हैं। इसी तरह के पाँच मुहावरों को लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

2. इन शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए

(क) फैलाना (ख) प्यार

(ग) मानव (घ) भूल

2 नचिकेता

आज से सहस्रों वर्ष पूर्व महर्षि बाजश्रवा हुए।

महर्षि बाजश्रवा का अधिकांश समय जप-तप में बीता करता था। उनके पुत्र का नाम नचिकेता था।

नचिकेता पितृभक्त बालक था। उसमें दृढ़ता, सत्य और धर्म के प्रति अगाध निष्ठा थी। उसके मुखमण्डल से तेज टपकता था। वह सहिष्णु था। बालक नचिकेता के इन्हीं गुणों के कारण पिता उससे अगाध स्नेह रखते थे। इस तरह नचिकेता पिता के लिए प्राणों से प्यारा बन गया था।

एक बार बाजश्रवा की इच्छा सर्वमेघ यज्ञ करने की हुई। इस यज्ञ में अपना सब कुछ दान कर देने के बाद ही फल की प्राप्ति होती है। इस बात को महर्षि बाजश्रवा अच्छी तरह जानते थे। यही बात उन्होंने अपने पुत्र नचिकेता को भी बताई थी। नचिकेता साधु प्रवृति का बालक था। पिता की इच्छा जानकर उसे बेहद खुशी हुई।

यज्ञ के लिए शुभ तिथि निश्चित की गई। उस दिन सर्वमेघ यज्ञ का शुभारम्भ हुआ। उसमें भाग लेने के लिए दूर-दूर से ब्राह्मण पधारे। नचिकेता ने यज्ञ की एक-एक क्रिया को ध्यान से देखा। सभी क्रियाएँ यथासमय पूर्ण होती गईं। अन्त में सिद्धहस्त ब्राह्मणों ने नारियल की पूर्णाहुति देकर उसे सम्पन्न किया। यज्ञ की समाप्ति पर महर्षि बाजश्रवा को अपना सब कुछ दान में दे देना था। ब्राह्मणों को अच्छा दान मिलने की पूर्ण आशा थी।

यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद महर्षि बाजश्रवा उठे। अग्नि देवता को नमस्कार करके वे अपनी गोशाला की ओर बढ़े। उनकी गोशाला में अनेक बढ़िया गायें थीं। वे सभी गायों को दान में देने का निश्चय कर चुके थे। परन्तु गोशाला तक पहुँचते-पहुँचते उनका मन लोभ से भर गया। वे

गोशाला की कमजोर, बूढ़ी और दूध न देनेवाली गायों की छँटनी करके ब्राह्मणों को दान-स्वरूप देने लगे।

ब्राह्मणों को ऐसी दक्षिणा की स्वप्न में भी आशा न थी। महर्षि बाजश्रवा की लोभ प्रवृत्ति देखकर वे दुखी हुए, पर कुछ कह नहीं सके। नचिकेता भी यह सब कुछ देख रहा था। उसे पिता के निश्चय बदल जाने से विशेष दुःख था। उसने पिता के पास जाकर पूछा, ''पिताजी ! आपने तो इस महायज्ञ में अपना सर्वस्व दान में देने का निश्चय किया था, लेकिन आप अपनी प्रिय चीजें न देकर ये बूढ़ी व कमजोर गायों को ही दे रहे हैं।''

महर्षि बाजश्रवा पुत्र की ओर देखकर तनिक मुस्कुराये पर बोले कुछ नहीं। वे वैसी ही गायों का दान करते रहे।

अब नचिकेता से नहीं रहा गया। उसकी सहनशक्ति समाप्त हो रही थी। उसने निडरतापूर्वक पिता से कहा, ''पिताजी, आपकी प्रिय वस्तु तो मैं हूँ। मुझे आप किसे दान में देंगे?''

इतना सुनते ही महर्षि बाजश्रवा के अधरों की मुस्कान लुप्त हो गई। उसका स्थान क्रोध ने ले लिया। वे उसी अवस्था में बोले, ''नचिकेता मैं तुम्हें यमराज को दान में दूँगा।''

''मैं इसे सहर्ष स्वीकार करता हूँ, पिताजी।'' नचिकेता ने खुश होकर उत्तर दिया, ''मैं आपकी आज्ञा से यमराज के पास चला जाऊँगा पर आप यज्ञशाला की सारी गायें ब्राह्मणों को दान में अवश्य दे दें। इसके बिना आपका सर्वमेघ यज्ञ निष्फल रहेगा।''

महर्षि बाजश्रवा के मुख से क्रोध में निकला, ''छोटा मुँह और बड़ी बात करता है। यज्ञ की मुझे चिन्ता होनी चाहिए, तुझे नहीं। तुम यमराज के पास जाओ बाकी मैं स्वयं देख लूँगा।''

महर्षि बाजश्रवा क्रोधावेश में यह भी भूल गए कि नचिकेता उनका इकलौता पुत्र है। पिता की ओर से मिला हुआ आदेश उस पितृभक्त बालक के लिए ब्रह्म-वाक्य था।

उधर दृढ़निश्चयी नचिकेता ने एक क्षण भी खोना ठीक नहीं समझा। उसने पिताजी के चरणों को स्पर्श कर यमराज के पास जाने की अनुमति माँगी।

अब महर्षि बाजश्रवा को होश आया कि उन्होंने क्रोधावेश में नचिकेता को यह क्या कह दिया? वे उसके दृढ़ निश्चय को अच्छी तरह जानते थे। वह इस बात से भी परिचित थे कि नचिकेता यमराज के पास जाए बिना मानेगा नहीं। फिर भी पिता का स्नेह उमड़ आया। उन्होंने पूछा, ''वत्स! यमराज से परिचित हो?''

''हाँ, पिताजी! वे मृत्यु के देवता हैं।'' नचिकेता ने सहज स्वर में कहा।

''यमराज के विषय में इतना जानकर भी तुम उनके पास जा रहे हो?'' महर्षि बाजश्रवा ने समझाने का प्रयास करते हुए कहा, ''मृत्यु के मुख में पहुँचकर कोई नहीं लौटा, वत्स!''

''जानता हूँ, पिताजी।'' नचिकेता ने कहा, ''पिता की आज्ञा ही मेरे लिए सर्वोपरि है। उसी ने मुझे निडर बना दिया है। आपके आशीर्वाद से मैं सब जगह आसानी के साथ पहुँच सकता हूँ। फिर मृत्यु तो ऐसा सच है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। एक-न-एक दिन सभी को उसके पास पहुँचना है।''

नचिकेता का तर्क न्यायसंगत था। उसके ज्ञान पर महर्षि बाजश्रवा को हर्ष भी हुआ और बिछोह पर शोक भी। वे पश्चाताप करते हुए बोले, ''वत्स, मैंने तो क्रोधावेश में ऐसा कह दिया था। मेरा मतलब यह नहीं था कि तुम यमपुरी जाओ। अब मैं किसी कीमत पर भी तुम्हें यमपुरी जाने की आज्ञा नहीं दे सकता।''

नचिकेता ने अत्यन्त विनम्र होकर कहा, ''आप तो यमपुरी जाने की आज्ञा पहले ही दे चुके हैं। अब कुछ भी कहना मेरे लिए निरर्थक है। मैंने आपकी आज्ञा पालन करने का संकल्प ले लिया है। अब तो उसे पूरा करने का अवसर प्रदान कीजिए और मुझे यमराज के पास जाने दीजिए। इसी में मेरा कल्याण है।''

नचिकेता की वाणी ने महर्षि बाजश्रवा को निरुत्तर कर दिया। उनका सौम्य चेहरा कुम्हला गया। उनके मस्तक पर विषाद की रेखाएँ स्पष्ट दिखाई पड़ने लगीं। नचिकेता को कहे वाक्य उन्हें शूल की तरह चुभने लगे।

पिता की ऐसी अवस्था देखकर नचिकेता ने कहा, ''पिताजी! आपके सर्वमेघ यज्ञ की सफलता भी मेरी यमलोक की यात्रा में ही है। उसे पूरा करना मेरा धर्म है। धर्म पर चलने का आदेश आप अवश्य देंगे।''

नचिकेता की ज्ञानभरी बातों के आगे महर्षि निरुत्तर हो गए। उन्होंने अश्रुपूर्ण नेत्रों से अपने इकलौते पुत्र नचिकेता को विदाई दी।

नचिकेता पिता को नमस्कार करके यमपुरी की ओर प्रस्थान कर गया। वह दिन-रात चलता रहा। उसे यमपुरी पहुँचने में कई दिन लग गए। यमपुरी के मुख्य द्वार पर उसे रोक लिया गया। उस समय यमराज कहीं बाहर गए हुए थे। उसे मुख्य द्वार पर ही उनकी प्रतीक्षा करनी पड़ी। ये प्रतीक्षा की घड़ी में तीन दिन और तीन रातें बीत गई। वह भूखा-प्यासा वहीं पड़ा रहा।

अन्त में यमराज लौटकर आए। अपने मुख्य द्वार पर ऋषि-कुमार को देखकर चिन्तित हो उठे। फिर उसका परिचय जानने के उद्देश्य से पूछा, ''तुम कौन हो?''

नचिकेता ने नमस्कार कर विनम्र स्वर में कहा, ''देव! मैं महर्षि बाजश्रवा का एकमात्र पुत्र नचिकेता हूँ।''

यमराज ने प्रश्न किया, ''ऋषिकुमार! तुम्हारे यहाँ आने का कारण?''

नचिकेता फिर विनम्र स्वर में बोला, ''देव! मेरे पिताश्री ने सर्वमेघ यज्ञ किया है। उसी की दक्षिणास्वरूप मुझे आपकी सेवा में भेजा है।''

इतना सुनकर यमराज का आश्चर्यचकित होना स्वाभाविक था। वे बोले, ''तुम्हें यमपुरी आते हुए भय नहीं लगा?''

नचिकेता ने सरलता के साथ उत्तर दिया, ''देव! भय कैसा? मेरी दृष्टि में मृत्यु तो सबसे बड़ा वरदान है। जब इंसान की देह उसका साथ देना छोड़ देती है, तब मृत्यु ही उसे कष्टों से मुक्ति दिलाती है। इसलिए इस मुक्तिदात्री को मैं भय का कारण नहीं मानता। मैंने तो सदैव इसे वरदान रूप में ही स्वीकारा है।''

बालक नचिकेता की बातें ज्ञान और रहस्य से भरी हुई थीं। इतनी अल्पावस्था में इतना गुणवान होना किसी विरले का ही काम है। इसलिए यमराज को और भी ज्यादा आश्चर्य हुआ। वह बालक की ज्ञान-भरी बातों से प्रभावित होते जा रहे थे। कुछ क्षण रुककर उन्होंने पूछा, ''नचिकेता, तुम तीन दिन से भूखे-प्यासे मेरे द्वार पर पड़े हुए हो?''

इस बार नचिकेता मौन रहा। उसने यमराज के इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

यमराज ने उसके आतिथ्य का पूरा प्रबन्ध कर दिया और खा-पीकर विश्राम करने के लिए कहा।

बालक नचिकेता ने यमराज का आतिथ्य स्वीकार कर लिया। वह खा-पीकर विश्राम करने लगा। अगले दिन जब वह सोकर उठा तो उसे यमराज ने बुलवाया। उसके आने पर यमराज ने कहा, ''ऋषिकुमार! हम तुम्हारे ज्ञान, पितृभक्ति और कर्मनिष्ठा से बहुत प्रसन्न हैं। इस उपलक्ष्य में तुम हमसे तीन वर माँग सकते हो।''

''देव! मैं तो दक्षिणास्वरूप आपके पास भेजा गया हूँ।'' नचिकेता ने विनम्र स्वर में कहा, ''फिर आपसे वर कैसे माँग सकता हूँ?''

बालक नचिकेता की न्यायसंगत बात सुनकर यमराज बोले, ''कोई बात नहीं बालक! तुम नि:संकोच होकर वर माँगो।''

इसपर नचिकेता ने कहा, ''देव! पहला वर तो यह दीजिए कि पिताश्री का मुझ पर से क्रोध शान्त हो और उन्हें सर्वमेघ यज्ञ का सुफल प्राप्त हो।''

''तथास्तु!'' यमराज के मुख से निकला, ''और दूसरा वर?''

नचिकेता ने फिर कहा, ''देव! जिस विद्या से भय उत्पन्न न हो, वह मुझे प्राप्त हो।''

''तथास्तु!'' यमराज ने कहा, '' और तीसरा वर?''

नचिकेता बोला, ''देव! आप सर्वज्ञाता हैं। आप मुझे आत्मा का रहस्य समझाइए।''

इतना सुनकर यमराज सोच में पड़ गए, बोले, ''नचिकेता! अभी तुम बहुत छोटे हो। आत्मा का रहस्य जानना तो ज्ञानी-ध्यानी मुनियों के बस की भी बात नहीं है। तुम और कोई तीसरा वर माँग सकते हो।''

''देव! मुझ पर तो आत्मा का ही रहस्य प्रकट करने की कृपा कीजिए।'' नचिकेता ने फिर कहा, ''इसके अलावा मुझे और कुछ जानना शेष नहीं है।''

विवश होकर यमराज को नचिकेता को आत्मा का रहस्य बतलाना पड़ा।

नचिकेता आत्मा के रहस्य को जानकर वापस पृथ्वी पर लौट आया। पिता बाजश्रवा पुत्र को पाकर बहुत प्रसन्न हुए।

बालक नचिकेता का नाम '' आत्मज्ञानी' के रूप में अमर हुआ।

- **कठोपनिषद्**

शब्दार्थ

सहस्रों-हजारों
दृढ़ता-मजबूती
अगाध-अथाह
प्रतीक्षा-इंतजार
निष्फल-व्यर्थ
निष्ठा-श्रद्धा एवं भक्ति
सहिष्णु-सहनशील
पितृभक्त-पिता का भक्त
स्वप्न-सपना
प्रस्थान-कूच

सम्पन्न- पूर्ण होना
आहुति-हवन में अग्नि को समर्पित की जानेवाली वस्तु
सम्बल-सहारा
प्रवृत्ति-आदत
अनायास-अचानक
अनुमति-आज्ञा
न्यायसंगत- न्यायपूर्ण
संकल्प-शपथ, प्रतिज्ञा
मुक्तिदात्री-मुक्ति देनेवाली

निरुत्तर-बिना उत्तर के
शोक-दु:ख
प्रयास-कोशिश
सौम्य-सुन्दर
कर्मनिष्ठा-कर्म करने में विश्वास
परिचित-जाना-पहचाना
लोभवश-लालच के कारण।
दृढ़ निश्चयी-पक्का इरादा करनेवाला

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. नचिकेता कौन था?
2. नचिकेता क्यों दु:खी हुआ? उसने अपने पिताजी से क्या कहा?
3. नचिकेता यमपुरी किस लिए गया?
4. नचिकेता को यमपुरी के मुख्य द्वार पर क्यों रुकना पड़ा?
5. नचिकेता ने यमराज से क्या-क्या वर माँगा?
6. नचिकेता यमराज से किस तरह का रहस्य जानना चाहता था? सही विकल्प के सामने ( ) लगाइए ✔

   (क) आत्मा का (ख) मृत्यु का

   (ग) जीवन का (घ) स्वर्ग का

7. **किसने, किससे कहा ?**

(क) "मृत्यु के मुख में पहुँचकर कोई नहीं लौटा, वत्स !"

....

(ख) "छोटा मुँह और बड़ी बात करता है। यज्ञ की मुझे चिन्ता होनी चाहिए, तुझे नहीं।"

....

(ग) "आप तो यमपुरी जाने की आज्ञा पहले ही दे चुके हैं। अब कुछ भी कहना मेरे लिए निरर्थक है।"

....

पाठ से आगे

1. महर्षि बाजश्रवा अगर ब्राह्मणों को गाय दान में दे देते तो क्या होता?
2. यज्ञ से क्या तात्पर्य है?
3. अगर आपको तीन वर माँगने के लिए कहा जाय तो आप क्या माँगेंगे?
4. नचिकेता 'साधु-प्रवृति' का था। 'साधु प्रवृति से आप क्या समझते हैं?

व्याकरण

1. **इनके पर्यायवाची शब्द बताइए-**

   (क) पुत्र - वत्स, बेटा, तनय

   (ख पिता - ....

   (ग) यमराज -.............................

(घ) गाय – ....

(ङ) साधु – ....

2. इनके विपरीतार्थक शब्द बताइए –

(क) सत्य – असत्य

(ख) धर्म – ....

(ग) सहिष्णु– ....

(घ) इच्छा – ....

(ङ) सम्पन्न – ....

3. देखिए, समझिए और लिखिए –

पितृभक्त – पितृ + भक्त

सहनशक्ति –

मुखमंडल –

गौशाला –

महायज्ञ –

ब्रह्मवाक्य –

कर्मनिष्ठ –

आत्मज्ञानी

4. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए –

(क) जो पिता की भक्ति करता हो ....

(ख) जो सब कुछ जानता हो ....

(ग) जिसने आत्मा का रहस्य जान लिया हो ....

(घ) जिसने दृढ़ निश्चय कर लिया हो ....

(ङ) जो सहनशील हो ....

गतिविधि

1. उपनिषदों के बारे में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त कीजिए।

3 पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ ।
चाह नहीं प्रेमी-माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ ।।

चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि, डाला जाऊँ ।
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ ।।

मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक ।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक ।।

-माखनलाल चतुर्वेदी

शब्दार्थ

चाह= इच्छा
सुरबाला= देवकन्या
बिंध=छेदा जाना, छिदकर
सम्राट=जिसके अधीन कई राजा हों।
शव=मृत शरीर
इठलाऊँ= नाज-नखरे करूँ ।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. **निम्नलिखित पंक्तियों के भावार्थ स्पष्ट कीजिए-**

   चाह नहीं सम्राटों के शव पर
   हे हरि, डाला जाऊँ।
   चाह नहीं देवों के सिर पर
   चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ ॥

2. प्रस्तुत पाठ में 'मैं' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?
3. "हे वनमाली, मुझे तोड़कर उस रास्ते पर फेंक देना, जिस रास्ते से होकर अपनी मातृभूमि पर शीश चढ़ाने वाले वीर जाते हैं।" उपर्युक्त भाव पाठ की जिन पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्ति होती है,उन पंक्तियों को लिखिए।
4. **"भाग्य पर इठलाऊँ" का कौन-सा अर्थ ठीक लगता है?**
   (क) भाग्य पर नाराज होना
   (ख) भाग्य पर गर्व करना
   (ग) भाग्य पर विश्वास न करना
5. 'चाह नहीं' पद कवि की किस तरह की भावना को व्यक्त कर रहा है?

पाठ से आगे

1. बड़े-बड़े सम्मान पाने की बजाय पुष्प उस पथ पर फेंका जाना क्यों पसंद करता है, जिस पर मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले वीर जाते हैं? अपना विचार व्यक्त कीजिए।
2. पुष्प की भांति आपकी भी कोई अभिलाषा होगी। उन्हें दस वाक्यों में लिखिए।

व्याकरण

1. 'भाग्य' शब्द के पहले **सौ** उपसर्ग लगाकर 'सौभाग्य' शब्द बनाते हैं। इसी प्रकार **नि, दुः, अन्** उपसर्ग लगाकर प्रत्येक से दो-दो शब्द बनाइए।

कुछ करने को

1. कल्पना के आधार पर इस कविता से संबंधित एक चित्र बनाइए।
2. मातृभूमि या देश-प्रेम से संबंधित अनेक कवियों ने कविताएँ लिखीं हैं। उनकी कविताओं को खोजकर पढ़िए और अपनी कक्षा में सुनाइए।

4 दानी पेड़

एक पेड़ था। वह एक छोटे लड़के को बहुत प्यार करता था। लड़का रोज पेड़ के पास आता। वह फूलों की माला बनाता, उसके तने पर चढ़ता, उसकी शाखाओं से झूलता और उसके फल खाता। फिर वह पेड़ के साथ लुका–छिपी खेलता। जब वह थक जाता तो पेड़ की छाँव में सो जाता। लड़का पेड़ से बहुत प्यार करता था। पेड़ बहुत खुश था।

समय बीतता गया। लड़का जवान हो गया। वह अब पेड़ पर खेलने नहीं आता। पेड़ अकेले दुखी होता। जब लड़का एक दिन आया तो पेड़ बहुत खुश हुआ। लड़के ने पेड़ से कहा– "मुझे पैसों की जरूरत है। मैं बहुत सी चीजें खरीदना चाहता हूँ। क्या तुम मुझे कुछ पैसे दे सकते हो?"

पेड़ ने कहा– " पैसे तो मेरे पास हैं नहीं। तुम मेरे फल तोड़ लो और उन्हें बाज़ार में बेच दो। इससे तुम्हें पैसे मिल जाएँगे।"

लड़का सब फल तोड़ कर ले गया। पेड़ अभी भी खुश था।

कई साल के बाद वह युवक फिर पेड़ के पास आया। "मेरी शादी होने वाली है। मुझे एक घर चाहिए। क्या तुम मुझे एक घर दे सकते हो?" उसने पेड़ से कहा।

पेड़ ने कहा–"घर तो मेरे पास है नहीं। लेकिन तुम मेरी शाखायें काट कर उनसे घर बना लो।" युवक पेड़ की सभी शाखाओं को काटकर ले गया। पेड़ का बस तना बचा रह गया। पेड़ अभी भी खुश था।

बहुत साल बीत गए। लड़का अधेड़ उम्र का आदमी बन गया था।

एक दिन पेड़ के पास आया और बोला– "मुझे मछली पकड़ने के लिये एक नाव चाहिए। क्या तुम मुझे एक नाव दे सकते हो?

पेड़ ने कहा– " नाव तो मेरे पास है नहीं। मेरा तना बचा है। उसे काट कर नाव बना लो।"

आदमी ने पेड़ का तना काटा और उसकी नाव बनाई। पेड़ अब भी खुश था।

पेड़ का अब केवल ठूंठ बचा था।

इस तरह कई साल बीत गए। एक दिन एक बूढ़ा आदमी पेड़ के पास आया। पेड़ ने उसे फौरन पहचान लिया। यह वही छोटा लड़का था। पेड़ उसे देखकर बहुत खुश हुआ। उससे खुशी के मारे बोलते नहीं बना। पेड़ ने कहा– "बेटा, मैं तुम्हें कुछ देना चाहता था। परंतु अब मेरे पास बचा ही क्या है? मेरे फल नहीं बचे जिन्हें तुम खा सको। मेरी शाखायें नहीं रहीं जिनसे कि तुम लटक सको। मेरा तना भी नहीं बचा जिस पर तुम चढ़ सको। बताओ, मैं तुम्हें क्या दूँ?"

बूढ़े ने कहा– " तुम देख रहे हो मेरी हालत। मेरे सब दाँत गिर चुके हैं। मैं अब फल नहीं चबा सकता। अब मेरी उम्र शाखाओं पर झूलने की नहीं रही। तने पर चढ़ने का दम अब मुझमें नहीं रहा। मैं बहुत थक गया हूँ। मुझे बस आराम से बैठने और सुस्ताने के लिए एक जगह चाहिए।"

"तो फिर आओ और मेरे ठूंठ पर शांति से बैठो।" पेड़ ने कहा।

बूढ़ा ठूंठ पर बैठ कर सुस्ताने लगा। पेड़ अब भी बहुत खुश था।

–शेल स्लिवरस्टाइन

© BSTBPC
WEBCOPY . NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ

ठूंठ– पत्ती एवं टहनी विहीन पेड़ **शाखा**– डाली, टहनी